मंगलम्

आह्वान

ग्यारहवीं शताब्दी के ऋषि क्षेमराज ने इस आह्वान की रचना, अपने ग्रन्थ प्रत्यभिज्ञाहृदयम् के लिए की थी। प्रत्येक अध्ययन सत्र का आरम्भ करने से पहले, श्रीगुरु की कृपा का आह्वान करने के लिए मंगलम् गाएँ जिससे प्रत्यभिज्ञाहृदयम् की पवित्र सिखावनियों को समझने और उन्हें आत्मसात् करने में आपके प्रयत्नों को सम्बल मिले।

ॐ नमो मङ्गलमूर्तये।

अथ प्रत्यभिज्ञाहृदयम्।

नमः शिवाय सततं पञ्चकृत्यविधायिने ।
चिदानन्दघनस्वात्मपरमार्थावभासिने॥

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

ॐ। जो मांगल्य के मूर्तरूप हैं, उन्हें नमस्कार।
अब आरम्भ होता है, प्रत्यभिज्ञाहृदयम् अर्थात् अभिज्ञान का सार।

उन शिव को सतत नमस्कार,
जो पञ्चकृत्यों को करते हैं,
जो परम सत्य को अवभासित करते हैं,
और उजागर करते हैं परम लक्ष्य को,
जो घनीभूत चेतना व आनन्द स्वरूप अपनी ही आत्मा है।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः![1]

[1] स्वामी शान्तानन्द द्वारा लिखित पुस्तक, *The Splendor of Recognition* से अनुवादित

ङ २०१६ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउण्डेशन'। सर्वाधिकार सुरक्षित।